International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

मध्याह्न भोजन योजना की भूमिका का अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं की तुलना के आधार पर मूल्यांकन करना ।

पूजा राणा
शोद्यार्थी
शिक्षा विभाग
हिमालियन यूनिवर्सिटी उत्तराखंड

सारांश

भारत को विकसित देशों की श्रेणी में स्थापित होने में अनेक कारण जैसे अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी आदि उत्तरदायी है। कोठारी कमीशन का कथन प्रासंगिक है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसी कक्षाओं में हो रहा है अतः इसे दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार द्वारा समय समय पर शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए कई योजनाएं प्रारंभ की गई जिनके माध्यम से प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा का सफल क्रियान्वयन हो सके। यह योजना पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंहा राव द्वारा 15 अगस्त 1995 में प्रारंभ की गई। इस योजना को क्रियान्वित करने का कार्य राज्य विज्ञान संस्थान जबलपुर को सौंपा गया है। विज्ञान संस्थान ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली तथा गृह विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर के सहयोग से इस परियोजना पर कार्य आरंभ कर दिया है। प्राथमिक विद्यालयों में संचालित मध्याह्न भोजन योजना एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जो बालक को स्कूली शिक्षा से जोड़ने तथा पौष्टिक आहार प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र मुजफ्फरनगर जनपद में संचालित मध्याह्न भोजन योजना मिड डे मील की भूमिका का अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिकियाओं की तुलना के आधार पर मूल्यांकन करने पर आधारित है। इस शोधपत्र में इस योजना पर शिक्षकों का दृष्टिकोण योजना में आने वाली समस्याओं तथा किस प्रकार इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है, का अध्ययन किया गया है। इसकी परिकल्पना मध्यान्ह भोजन योजना हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया से माध्यमों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं होना है। प्रस्तुत शोध एक सर्वेक्षण प्रकार का शोध है। समष्टि में से सोद्देश्य परक न्यादर्श तकनीक द्वारा न्यादर्श या चयन किया गया है। न्यादर्श का चयन मुजफ्फरनगर जिले के विकास खंडों से दस प्राथमिक विद्यालयों को , यादृच्छिक विधि से 3-3 अध्यापकों एवं 3-3 अभिभावकों का चयन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण में स्वतंत्र टी परीक्षण एवं प्रतिशत मान विधि का उपयोग किया गया। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना को एक समान रूप से प्रभावी पाया गया.।

मूल शब्द

प्राथमिक विद्यालय, मध्याह्न भोजन, स्वास्थ्य, उपस्थिति, प्रतिक्रिया ।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का आधार है । व्यक्ति का व्यक्तिगत और सामाजिक विकास शिक्षा के माध्यम से होता है। शिक्षा प्रदान करने का औपचारिक साधन विद्यालय है। बालक की सीखने और सिखाने की प्रक्रिया में विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान होता है लेकिन भूखा और कुपोषित तथा विद्यालय आए बिना बालक सीख नहीं सकता।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए 15 अगस्त 1995 को भारत ने लगभग विकास खंडों के प्राथमिक विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना (मिड डे मील) कार्यक्रम लागू किया गया है इस कार्यक्रम को लागू करते समय इसका मुख्य उद्देश्य था

1.बच्चों को अच्छा पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना तथा उन्हें कुपोषण से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाना।

2.विद्यालय में बालकों के नामांकन व उपस्थिति को बढ़ाना।

मध्याह्न भोजन से तात्पर्य

सरकारी विद्यालयों में अधिकतर बच्चे निर्धन व मध्यम वर्ग के होते हैं जिनके माता पिता की आय बहुत कम होती है और घर के सदस्यों की संख्या अधिक होती है इसीलिए अधिकांशतः यह होता है कि उन्हें वक्त पर भोजन तो मिलता है परंतु वह पौष्टिक नहीं होता जिसके कारण बच्चों की शारीरिक शक्ति कम हो जाती है, व पढ़ाई में मन नहीं लगता है। विद्यालय में बालकों को लगभग 6 घंटे रहना पड़ता है और सायंकाल हो जब उन्हें खाना मिलता है तो इस बीच लगभग 7 घंटे का अंतर पड़ता है बालकों को भोजन हेतु इतना अंतर उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं जबकि बच्चे बहुत क्रियाशील होते हैं व विद्यालय में पढ़ने, खेलने, मस्ती करना आदि में अत्यधिक शारीरिक ऊर्जा खत्म होती है अतः उन्हें विद्यालय में भी संतुलित भोजन की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के समय के बीच में विद्यार्थियों को भोजन दिया जाना ही मध्याह्न भोजन योजना कहलाता है।

मध्याह्न भोजन योजना का क्रियान्वयन

भारत शासन के संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशानुसार तथा सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिका क्र° 196/2001 में पारित अंतरिम आदेश के पालन में देश के सभी शासकीय प्राथमिक शालाओं के छात्रों को शाला लगने के समय गर्म पका हुआ भोजन वितरित किया जाना अनिवार्य किया गया है जिसे सन् 1997-98 में माध्यमिक स्तर तक बढ़ा दिया गया है। जापान में सन 1800 ब्राज़ील में और 1932 में अमरीका में बच्चों की स्कूल में आकर्षित करने के उद्देश्य से यह योजना प्रारंभ की गई। 1956 में तमिलनाडु में छोटे स्तर पर यह योजना शुरू की गई। मध्यप्रदेश में यह योजना पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव द्वारा 15 अगस्त 1995 में प्रारंभ की गई।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

किसी भी शोध कार्य को आरंभ करने से पूर्व उसकी उपादेयता, आवश्यकता एवं महत्त्व को जानना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया गया है कि अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना का कितना प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर हुआ है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या इस प्रकार है--

मध्याह्न भोजन योजना की भूमिका का अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं की तुलना के आधार पर मूल्यांकन करना।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

1. मध्याह्न भोजन योजना पर शिक्षकों एवं अभिभावकों के दृष्टिकोण को जानना ।
2. मध्याह्न भोजन योजना में आने वाली समस्याओं के बारे में अध्ययन करना।
3. मध्याह्न भोजन योजना को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव देना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया ।

मध्याह्न भोजन योजना हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रियाओ के माध्यमों के बीच कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं होगा।

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध एक सर्वेक्षण प्रकार का शोध है जिसमें शिक्षा से संबंधित एक महत्वाकांक्षी योजना मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की उपयोगिता के मूल्यांकन हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों का सर्वेक्षण किया गया ।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध पत्र मे मुजफ्फरनगर जनपद के विकास खंडों के दस प्राथमिक विद्यालयों से 3-3 शिक्षकों एवं 3-3 अभिभावकों को शामिल किया गया।

पूर्व में किए गए शोध कार्य–

टेज और विवेक (2002) में आकाल संघर्ष समिति राजस्थान की एक बैठक 'सीकर' स्थित एक गैर सरकारी संगठन द्वारा एक शोध अध्ययन पर आधारित सीकर जिले के 26 गांवों में किए गए एक सर्वेक्षण में पाया कि मध्याह्न भोजन योजना चालू होने के बाद विद्यालयों में प्रवेश की दर औसतन 25% तक बढ़ गई । छोटे गांव के वैकल्पिक विद्यालयों के दोपहर का भोजन प्रारम्भ होने से प्रवेश की दर लगभग दोगुनी हो गई है।

सेठ (2003) का अध्ययन रायगढ़ जिला (उड़ीसा) पर केंद्रित है जहाँ पका हुआ मध्याहन भोजन दिया जा रहा है। शोधकर्ताओं को न केवल पहली कक्षा में वृद्धि के साक्ष्य मिले बल्कि प्रामाणिक स्तर पर लगाव में भी वृद्धि पाई गई । स्कूलों में सहभागिता विशेषकर लड़कियों के संबंध में तीव्र वृद्धि में मध्याह्न भोजन की विशेष भूमिका है।

पश्चिमी बंगाल में मध्याह्न भोजन योजना कार्यक्रम (2005) इस राज्य में चलाए जा रहे मध्याह्न भोजन योजना कार्यक्रम के फलस्वरूप छात्रों के नामांकन में वृद्धि हुई व अध्यापकों की भोजन योजना में संलग्नता के कारण अध्यापकों की अनुपस्थिति में सुधार देखने को मिला है । सर्व धर्म, जाति संबंधों को बल मिला है।

अर्चना अग्रवाल (2010) इन्होंने प्राथमिक स्तर पर नामांकन और ड्रापआउट की समस्या विषय पर अपना अध्ययन किया जिसमें उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि लड़कियों के नामांकन प्राथमिक विद्यालयों में लड़कों की अपेक्षा कम है तथा ड्रॉप आउट लड़कों की अपेक्षा अधिक थी जिनके कारणों में अभिभावकों द्वारा लड़की शिक्षा को धन व समय का अपव्यय मानना था। निम्न स्तर की शिक्षण पद्धति एवं कठोर दंड का प्रावधान आदि प्रमुख थे !

न्यादर्श----

प्रस्तुत शोध कार्य की समष्टि के लिये मुजफ्फरनगर जिले के अंतर्गत मध्याह्न भोजन योजना में सम्मिलित दस प्राथमिक विद्यालयों के 3-3 अध्यापक एवं 3-3 अभिभावकों का उद्देश्यपरक न्यादर्श तकनीक द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया। न्यादर्श का चयन मुजफ्फरनगर जिले के विकास खंडों से किया गया। प्रत्येक विकास खंड से एक एक विद्यालय का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया जिसे निम्न रूप से प्रदर्शित किया गया है—

समूह	संख्या	योग
प्राथमिक विद्यालय	10	10
अध्यापक	प्रत्येक विद्यालय से 3	30
अभिभावक	प्रत्येक विद्यालय से 3 परिवार	30

चयनित विद्यालयों की सूची		
क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	विकासखंड
1	प्राथमिक विद्यालय शेरनगर	मुजफ्फरनगर
2	प्राथमिक विद्यालय अलमासपुर	मुजफ्फरनगर
3	प्राथमिक विद्यालय कूकडा	मुजफ्फरनगर
4	प्राथमिक विद्यालय सुजडू	मुजफ्फरनगर
5	प्राथमिक विद्यालय पचेंडा कलां	मुजफ्फरनगर
6	प्राथमिक विद्यालय बड़कली	मुजफ्फरनगर

7	प्राथमिक विद्यालय रसूलपुर जाटान	मुजफ्फरनगर
8	प्राथमिक विद्यालय काकड़ा	मुजफ्फरनगर
9	प्राथमिक विद्यालय हरसोली	मुजफ्फरनगर
10	प्राथमिक विद्यालय मदीनपुर	मुजफ्फरनगर

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रियाओ के प्रदत्त एकत्रित किए गए। प्रतिक्रियाओं को ज्ञात करने हेतु शोधार्थी द्वारा अध्यापकों हेतु प्रतिक्रिया मापनी विकसित की गयी। प्रतिक्रिया मापनी में कुल 20 कथन थे। इन कथनों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन सम्मिलित किये गए थे। सकारात्मक कथन हेतु पांच बिंदु मापनी पर क्रमशः 5 4 3 2 1 तथा नकारात्मक कथनो हेतु क्रमशः 1 2 3 4 व 5 अंक भार का उपयोग किया गया। प्रतिक्रिया मापनी में मध्याह्न भोजन योजना के विभिन्न पक्षों जैसे नियमितता, मात्रा, नामांकन व विरतता दर परप्रभाव, स्वच्छता ,साफ सफाई, निरीक्षण कार्य ,शिक्षण कार्य पर प्रभाव , अतिरिक्त कार्य भार आदि से संबंधित कथन शामिल किए गए थे।

प्रदत्त संकलन

सर्वप्रथम मुजफ्फरनगर जिले के सात विकास खंडों में चयनित विद्यालयों से चयनित न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमति प्राप्त की गयी तत्पश्चात न्यादर्श के रूप में चयनित अध्यापकों एवं अभिभावकों से आत्मीय संबंध स्थापित कर शोध का उद्देश्य स्पष्ट किया गया । उन्हें विश्वास दिलाया गया कि प्रस्तुत शोध से प्राप्त प्रतिक्रिया को पूर्णतः गोपनीय रखा जाएगा और केवल शोध कार्य हेतु उपयोग में लाया जाएगा तत्पश्चात समस्त अध्यापकों एवं अभिभावकों से शोधार्थी द्वारा निर्मित प्रतिक्रिया मापना भरवाईं गयी। प्रतिक्रिया के पश्चात प्रतिक्रिया मापनी से सकारात्मक एवं नकारात्मक कथनों का अंक भार के आधार पर फलांकन किया गया। इस प्रकार शोध हेतु चयनित न्यादर्श से मध्याह्न भोजन योजना की भूमिका के प्रति अध्यापक और अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं के दत्त एकत्रित कर लिए गए।

प्रदत्त विश्लेषण

मध्याह्न भोजन योजना हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं के माध्यमों की तुलना हेतु स्वतंत्र टी परीक्षण एवं प्रतिशत मान विधि का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या

अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण से मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन ।

सारणी

क्र . सं .	समहू का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
		N	M	S.D	t Value	स्तर
1	अध्यापक	30	47	5.39	3.51	**
2	अभिभावक	30	51.04	3.23		

****0.01 स्तर पर सार्थक है ।.**

प्रस्तुत सारणी में अध्यापकों व अभिभावकों की दृष्टि से मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों की तुलना टी मान के रूप में की गई है। इसमें अध्यापक समूह का मध्यमान 47 प्राप्त हुआ है तथा अभिभावक समूह का मध्यमान 51.04 प्राप्त हुआ है। समंकों के आधार पर अध्यापक समूह का मानक विचलन 5.39 तथा अभिभावक समूह का विचलन 3.23 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य टी का मान 3.51 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त टी का मान टी सारणी के अनुसार 0.05 स्तर पर 1.96 से अधिक है तथा 0.01 स्तर पर 2.58 से भी अधिक है । अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों व अभिभावकों की दृष्टि में मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों में सार्थक अंतर है ।

अतः अध्यापकों की तुलना में अभिभावक मध्याह्न भोजन योजना को अधिक प्रभावी मानते हैं। यदि इसी जनसंख्या से 100 प्रतिदर्श लिया जाए तो 99% प्रतिदर्शों में यह परिणाम प्राप्त होगा। केवल 1% प्रतिदश का मान इससे भिन्न हो सकता है ।

शोध परिकल्पना की वैधता--

शोध परिकल्पना के अनुसार प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर मध्याह्न भोजन योजना के प्रभाव के संबंध में अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है। आंकड़ों के विश्लेषण से टी का मान 3.51 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है ।अतएव शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण से मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों की उपस्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन--

सारणी

क्र . सं .	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
		N	M	S.D	t Value	स्तर
1	अध्यापक	30	11.6	1.52	5.14	**
2	अभिभावक	30	13.4	1.04		

**0.01 स्तर पर सार्थक है ।.

उपरोक्त सारणी में अध्यापकों व अभिभावकों की दृष्टि से मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों की उपस्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों की तुलना टी मान के रूप में की गई है। इसमें अध्यापक समूह का मान 11.60 तथा अभिभावक समूह का मध्यमान 13.4 प्राप्त हुआ है। अध्यापक समूह का मानक विचलन 1.52 प्राप्त हुआ है तथा अभिभावक समूह का मानक विचलन 1.04 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य टी का मान 5.14 प्राप्त हुआ है।

उपरोक्त सारणी के अनुसार टी का मान 5.14 प्राप्त हुआ है अतः टी का मान टी सारणी के अनुसार न्यूनतम मान 0.05 स्तर पर 1.96 से अधिक है तथा अधिकतम मान 0.01 स्तर पर 2.58 से भी अधिक है । अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि टी सारणी से तुलना के आधार पर प्राप्त मान दोनों स्तरों पर अधिक है । अतः मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों की उपस्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों की तुलना के संबंध में अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है। अध्यापकों की तुलना में अभिभावक इस आयाम पर अधिक सहमत माने गए हैं।

निष्कर्ष---

अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों तथा तथ्यों के आधार पर तथा परिकल्पनाओं की वैधता के परिणामों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि अध्यापकों व अभिभावकों का प्रश्नावली के द्वारा जो साक्षात्कार किया गया है उनसे कुछ मत उभरकर आए हैं कि मध्याह्न भोजन योजना एक अत्यंत उपयोगी व प्रभावी योजना है जिसके क्रियान्वयन के फलस्वरूप न केवल प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव पड़ा अपितु उनको सक्रिय भी बनाया है। अतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि मध्याह्न भोजन योजना का विद्यार्थियों के नामांकन, उपस्थिति, अनुशासन और स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। मध्याह्न भोजन योजना को लेकर अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण में अंतर पाया गया है। अभिभावकों की अपेक्षा अध्यापक मध्याह्न भोजन योजना की प्रक्रिया से संतुष्ट नहीं माने गए हैं क्योंकि अध्यापकों के दृष्टिकोण से मध्याह्न भोजन योजना के क्रियान्वयन से शैक्षिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होता है इसके फलस्वरूप अध्यापक मानसिक थकान का अनुभव करते हैं। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियों की उपस्थिति पर अध्यापकों व अभिभावकों दोनों का दृष्टिकोण समान है। दोनों के विचारों के आधार पर यह योजना नामांकन में वृद्धि करने में सफल रही है।

मध्याह्न भोजन योजना (मिड डे मील) में आने वाली समस्याएं---

1 शिक्षकों को मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत बनाने वाले भोजन की व्यवस्था भी देखनी पड़ती है जिससे उनका कभी कभी काफी समय बर्बाद हो जाता है और कक्षा में कम समय दे पाते हैं।
2
3 कभी कभी मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत बनाने वाले भोजन को बनाने वालों को उचित वेतन न मिलने के कारण वह इस काम को पूरा मन लगाकर नहीं करते हैं और उचित साफ सफाई पर भी ध्यान नहीं देते ।
4 मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत कभी कभी सरकार से प्राप्त होने वाला खाद्यान्न अच्छी गुणवत्ता का नहीं होता है।
5 मध्याह्न भोजन योजना में समुदाय तथा अभिभावकों की साझेदारी का कम होना।
6 मध्याह्न भोजन योजना में भोजन बनाते समय भोजन बनाने वालों को व भोजन करते समय छात्रों को कभी कभी जातिगत भेदभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
7 मध्याह्न भोजन योजना में मिलने वाला बजट व खाद्यान्न कभी कभी विद्यालयों को समय पर उपलब्ध नहीं हो पाता है।
8 मध्याह्न भोजन योजना का बजट इतना अधिक न होना कि तय मानको के अनुसार बालकों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जा सके ।

निराकरण हेतु सुझाव--

1 प्राथमिक शिक्षा को विभिन्न संसाधनों व योजना के माध्यम से और अधिक आकर्षक बनाया जाए।
1 प्राथमिक शिक्षा के सशक्तिकरण हेतु सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों के पठन पाठन से संबंधित पुस्तकें, कार्य अभ्यास पुस्तिका छात्रावास से ही उपलब्ध कराया जा।
2 कम उपस्थिति की समस्या वाले बालकों पर अध्यापक अधिक ध्यान दें तथा पठन पाठन से संबंधित समस्याओं का सरल व सहज भाव से निराकरण करें ।
3 सरकार द्वारा निर्धारित मानको के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों को उन्नत किया जाये। विद्यालय का वातावरण स्वस्थ, सुंदर और आकर्षक हो जो बच्चों के मन पर प्रभाव डाल सके।
4 प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा के स्तर को सुधारने हेतु तथा उसे प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
5 प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन व उपस्थिति की संख्या में वृद्धि हेतु अभिभावकों को प्रेरित किया जाए तथा उन्हें शिक्षा की महत्ता व आवश्यकता से पूर्ण रूप से अवगत कराया जाए।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव---

- प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित क्षेत्र में आगे और शोध कार्य किया जा सकता है। भविष्य में निम्न क्षेत्रों या विषयों पर शोध कार्य किया जा सकता है1

- प्रस्तुत शोध एक जिले के एक विकासखंड स्तर पर किया गया है इसे दो अलग अलग जिलों के विकासखंड स्तरों की तुलना के रूप में किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध जनपद स्तर पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में केवल प्राथमिक विद्यालयों को सम्मानित किया गया है आगे इसे उच्च प्राथमिक विद्यालयों पर भी प्रसारित किया जा सकता है।
- इस योजना का शैक्षिक सत्रों के अनुसार उपलब्धियों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
- प्राथमिक स्तर पर अपव्यय व अवरोधन के कारणों का अध्ययन करने के लिये शोध कार्य किया जा सकता है।
- पिछड़े जिलों व विकसित जिलों के प्राथमिक स्तर की शिक्षा के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।
- प्राथमिक स्तर पर प्राथमिक अध्यापकों के शैक्षिक रुचि के संबंध में शोध कार्य किया जा सकता है।
- ग्रामीण व नगरीय विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची---

1 अग्निहोत्री,रवींद्र भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या। दिल्ली रिसर्च पब्लिकेशन

2 जैन,शाह मध्यप्रदेश में मध्याहन भोजन योजना, (2006)

3 खेरा, रितिका मिड डे मील इन राजस्व, द हिंदू (13 नवंबर 2002)

4 पाठक, पी०डी० भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं (1995) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।

5 मध्याहन भोजन योजना WWW mid day meal. Com

6 रानी, आशा मध्याहन भोजन योजना एक अवलोकन,श्रृंखला 1 शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वॉल्यूम फ़ोर, (इश्यू 5 जनवरी 2017)

7 जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद मुरादाबाद.